तोड़ चुकी मैं तार सखे !

नेह पाश में बाँधे ऐसे, तोड़ चुकी मैं तार सखे !
अपने को ही करूँ समर्पित,मैं अपना यह प्यार सखे ! !

आकर्षण आकाश निहारा, कहीं न कोई मिला किनारा
आगे से आगे पाने की प्यास, श्वास बन करे इशारा
शान्ति सदन की झलक मिलेगी, इससे कोसों पार सखे !
अपने को ही करूँ समर्पित,मैं अपना यह प्यार सखे ! !

अन्तस्थल के नीलगगन में, आत्मसुर्य का सदा उजारा
जड़ता के उस पार पहुँचकर, ही पाया कुछ नया नजारा
क्षण क्षण चेतन दीप मिला है, आज मुझे उपहार सखे !
अपने को ही करूँ समर्पित,मैं अपना यह प्यार सखे ! !

नाद ओम का चले अनाहत, कण्ठों में अर्हम् सुखकार
'आनन्दो में वर्षति वर्षति', हर पल कहता हृद्वय उदार
मुक्त गगन में, मुक्त मनुज ने, पाया नव अवतार सखे !
अपने को ही करूँ समर्पित,मैं अपना यह प्यार सखे ! !